क्रान्तिकारी भगत सिंह का राष्ट्रवादी आंदोलन में योगदान एक ऐतिहासिक अध्ययन

मधुरिमा
शोधार्थी इतिहास विभाग,
ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।

सारांश :

''नौजवान राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं के नाम पत्र 'शीर्षक के साथ मिले इस दस्तावेज के कई प्रारूप और हिन्दी अनुवाद उपलब्ध हैं, यह इसके सम्पूर्ण रूप का अंग्रेजी अनुवाद है। 'कौम के नाम सन्देश' के रूप में इसका एक संक्षिप्त रूप भी इस अनुभाग में संकलित है। लाहौर के पीपुल्ज में 29 जुलाई, 1931 और इलाहाबाद के अभ्युदय में 8 मई, 1931 के अंक में इसके कुछ अंश प्रकाशित हुए थे। यह दस्तावेज अंग्रेज सरकार की एक गुप्त पुस्तक 'बंगाल में संयुक्त मोर्चा आन्दोलन की प्रगति पर नोट' से प्राप्त हुआ, जिसका लेखक एक सी आई.डी. अधिकारी सी.ई.एस. फेयरवेदर था और जो उसने 1936 में लिखी थी। उसके अनुसार यह लेख भगतसिंह द्वारा लिखा गया था और 3 अक्टूबर, 1931 को श्रीमती विमला प्रभादेवी के घर से तलाशी में बरामद हुआ था। यह पत्रध् लेख भगत सिंह ने फाँसी से करीब डेढ़–दो महीने पहले, सम्भवतरू 2 फरवरी, 1931, को जेल से ही लिखा था।'' भगत सिंह का जन्म शनिवार 28 सितम्बर, 1907 प्रातः 9:00 बजे बंगा गाँव जिला लायलपुर में हुआ। दादा सरदार अर्जुन सिंह इनके तीन बेटे थे सरदार किशन सिंह, सरदार अजीत सिंह और सरदार स्वर्ण सिंह, पिता का नाम सरदार किशन सिंह व माता का नाम विद्यावती था। भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह पंजाब के एक गाँव खटकड़कला, जिला जालंधर के निवासी थे। बीसवीं सदी के आरम्भिक वर्षों में जब अंग्रेजी सरकार ने लायलपुर के इलाके में नई नहर खुदवा कर उसे आबाद करने के लिए जालंधर, होशियारपुर आदि के निवासियों को वहाँ जाकर बसने के लिए जमींने दी तो सरदार अर्जुन सिंह भी बंगा जिला लायलपुर में जा बसे।

मूल शब्द :– दस्तावेज, संदेश कौम, अनुभग, संकलित, अभूदय प्रगति, पत्रधू, सम्भवतररू।

प्रस्तावना :

भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की स्थापना के बाद, इस देश को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के पंजे से स्वतंत्र कराने के लिये स्वतंत्रता आन्दोलन अथवा राष्ट्रीय आन्दोलन चले। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन कई चरणों से गुजरता हुआ अपने लक्ष्य की ओर अग्रसित हुआ। सविनय अवज्ञा आन्दोलन के पश्चात् ऐसी अनेक घटनायें हुई, कुछ ऐसे तत्त्व सक्रिय हुये, जिसके परिणामस्वरूप भारत को लगभग 200 वर्षों तक अंग्रेजों की गुलामी की बेड़ी में जकड़े रहने के पश्चात् स्वतंत्रता की बयान भयस्सर हुई।

ब्रिटिश साम्राज्य में भारतीय राज्यों का विलय होने के पश्चात् भारतीयों में अंग्रेज विरोधी भावनाएँ जागृत होने लगी। प्लासी विद्रोह के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध अनेक विद्रोह, आन्दोलन एवं बगावतें हुई और ब्रिटिश शासन का खुले आम विरोध किया गया। जिसमें किसानों, शासकों, सैनिकों जमींदारों, धार्मिक भिक्षुओं तथा अपदस्य भारतीय शासन के मंत्रियों एवं आश्रितों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह तथा आन्दोलन किये।

ब्रिटिश शासन अन्याय और शोषण पर आधारित था। अंग्रेजी शासन के आरम्भिक 100 वर्षों में राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और सैनिक क्षेत्र में अनेक ऐसी प्रवत्तियों का उदय हुआ जिन्होंने भारतीय जनता को अंग्रेजी शासन का प्रबल विरोधी बना दिया। जिसके परिणामस्वरूप एक व्यापक विद्रोह हुआ, जिसे 1857 का भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा जाता है। यद्यपि इस संघर्ष में अंग्रेज सफल हुये और उन्होंने भारत में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना की। क्रान्ति की असफलता के बाद अंग्रेजों ने क्रान्ति में भाग लेने वाले भारतीयों पर अमानुषिक अत्याचार किये।

असफल क्रान्ति ने राष्ट्रीयता की भावनाओं को प्रोत्साहित किया। भारतीय धर्म और संस्कृति का पुर्नजागरण हुआ तथा अंग्रेजों के प्रति भारतीय भावनायें दिन प्रतिदिन उग्र होती चली गयी। इन भावनाओं ने 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योग दिया। 1885 में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योग दिया। 1885 में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अखिल भारतीय स्वरूप का संगठन था। इसका उद्देश्य जाति, धर्म या वर्ण के किसी भेदभाव के बिना सभी भारतवासियों का प्रतिनिधित्व करना था।

भारतीय स्वतंत्रता के लक्ष्य की प्राप्ति के लिये कांग्रेस के द्वारा जिन विभिन्न रूपों में कार्य किया गया, उसके आधार उदारवादी, उग्रवादी तथा गाँधी युग के रूप में हमारे सामने आये। इनके माध्यम से भारत में अनेक आन्दोलन हुये। भारत और ब्रिटेन की बीच हितो का विरोध इन आन्दोलन का मूल आधार था। गांधी युग में तो राष्ट्रीयता जन–जन की वस्तु बन चुकी थी। बच्चे–बच्चे के मुख से स्वतंत्रता की माँग सुनने को मिलती थी।

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में भारत में अपूर्व राष्ट्रीय जागृति की लहर आयी, और वह दो धाराओं में बँट गयी। एक उग्रवादी राष्ट्रवाद की धारा प्रभावित हुई जो 'निष्क्रिय प्रतिरोध' के सिद्धान्त पर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध संघर्ष करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त नवयुवकों का एक ऐसा वर्ग था जिन्हें उग्रवादियों के शान्ति पूर्ण संघर्ष में विश्वास नहीं था। वे हिंसा तथा आतंक द्वारा भयभीत करके विदेशी शासन का समूल नष्ट करना चाहते थे। इस प्रकार उदारवादी, उग्रवादी तथा क्रान्तिकारी सभी का लक्ष्य एक ही था, भारत की आजादी, साधन भले ही भिन्न थे और यह आन्दोलन नागरिक स्वतंत्रता के पक्षधर थे।

नवयुवकों के इस वर्ग को क्रान्तिकारी आन्दोलन का रूप दिया गया। भारतीय क्रान्तिकारियों ने कार्यों की पृष्ठभूमि में एक निश्चित दर्शन था और उनका एक सामान्य लक्ष्य था। इन क्रान्तिकारियों के द्वारा सरकारी खजाने लटने, सशस्त्र डकैती, हत्या और बमबाजी के जो भी कार्य किये जाते थे वे सभी भारत के लिये स्वतंत्रता प्राप्त करने की निश्चित और व्यापक योजना के अंग थे। इन क्रान्तिकारियों के उद्देश्य भारत में ब्रिटिश शासन को समाप्त कर स्वतंत्रता प्राप्त करना और निम्न वर्ग के प्रति अन्याय पर आधारित व्यवस्था का अन्त करके एक न्यायपूर्ण व्यवस्था की स्थापना करना था। भारत में क्रान्तिकारी संगठित होना शुरू हो गये थे। धीरे–धीरे क्रान्तिकारी आतंकवाद की दो धाराएँ विकसित हुई–एक पंजाब, उत्तर पंजाब, उत्तर प्रदेश और बिहार तथा दूसरी बंगाल में। ये दोनों धाराएँ सामाजिक बदलाव से उपजी नई सामाजिक शक्तियों से प्रभावित हुई। इसमें थे, क्रान्तिकारी रामप्रसाद विस्मिल, योगेश चटर्जी और शचीन्द्र नाथ सान्याल आदि। उत्तर प्रदेश के क्रान्तिकारियों के लिये 'काकरी काण्ड, एक बड़ा आघात जरूर था, पर ऐसा नहीं जो क्रान्तिकारी आन्दोलन के लिये मौत साबित हो। बल्कि इस घटना के पश्चात् क्रान्तिकारी संघर्ष के लिये और भी युवा तैयार हो गये। विजय कुमार सिन्हा, शिव वर्मा, जयदेव कपूर एवं भगत सिंह भगवतीचरण बोहरा, सुखदेव ने चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में एच.आर.ए. को फिर से कार्य शुरू करने दिया एवं ये युवा समाजवादी विचारधारा के प्रभाव में आते चले गये।

क्रान्तिकारी गतिविधियाँ :

उस समय भगत सिंह करीब बारह वर्ष के थे जब जालियाँवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ था। इसकी सूचना मिलते ही भगत सिंह अपने स्कूल से 12 मील पैदल चलकर जालियाँवाला बाग पहुँच गये। इस उम्र में भगत सिंह अपने चाचाओं की क्रान्तिकारी किताबें पढ़ कर सोचते थे कि इनका रास्ता सही है कि नहीं ? गाँधी जी का असहयोग आन्दोलन छिड़ने के बाद वे गाँधी की अहिंसात्मक तरीकों और क्रान्तिकारियों के हिंसक आन्दोलन में से अपने लिये रास्ता चुनने लगे। गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन को रद्द कर देने के कारण उनमें थोड़ा रोष उत्पन्न हुआ, पर पूरे राष्ट्र की तरह वो भी महात्मा गाँधी का सम्मान करते थे। पर उन्होंने गाँधी जी के अहिंसात्मक आन्दोलन की जगह देश की स्वतन्त्रता के लिये हिंसात्मक क्रांति का मार्ग अपनाना अनुचित नहीं समझा। उन्होंने जुलूसों में भाग लेना प्रारम्भ किया तथा कई क्रान्तिकारी दलों के सदस्य बने। उनके दल के प्रमुख क्रान्तिकारियों में चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरू इत्यादि थे। काकोरी काण्ड में 4 क्रान्तिकारियों को फ्राँसी व 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि उन्होंने 1928 में अपनी पार्टी नौजवान भारत सभा का हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन में विलय कर दिया और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन।

विरासत से साक्षात्कार : भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन

होली के दिन रक्त के छींटे / 15 मार्च, 1926

काकोरी के वीरों से परिचय / मई, 1927

काकोरी के शहीदों की फाँसी के हालात / जनवरी, 1928

काकोरी के शहीदों के लिए प्रेम के आँसू / जनवरी, 1928

अनतर्राष्ट्रीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का अध्ययन

अराजकतावादरु एक / मई, 1928

अराजकतावादरु दो / जून, 1928

अराजकतावादरू तीन / जुलाई, 1928

रूस के युगान्तकारी नाशवादी (निहिलिस्ट) / अगस्त, 1928

रूस की जेलें भी स्वर्ग हैं / सितम्बर, 1928

मेरी रूस यात्रा / अक्टूबर, 1928

आयरिश स्वतन्त्रता युद्ध / अक्टूबर, 1928

क्रान्तिकारी पार्टी

क्रान्तिकारियों के सक्रिय ग्रुप की मुख्य जिम्मेदारी, जनता तक पहुँचने और उन्हें सक्रिय बनाने की तैयारी में होती है। यही हैं वे चलते–फिरते दृढ़ इरादों के लोग जो राष्ट्र को जुझारू जीवनी शक्ति देंगे। ज्यों–ज्यों परिस्थितियाँ पकती हैं तो इन्हीं क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों–जो बुर्जुआ व पेटी बुर्जुटा वर्ग से आते हैं और कुछ समय तक इसी वर्ग से आते भी रहेंगे, लेकिन जिन्होंने स्वयं को इस वर्ग की परम्पराओं से अलग कर लिया होता है कृ से क्रान्तिकारी पार्टी बनेगी और फिर इसके गिर्द अधिक से अधिक सक्रिय मजदूर – किसान और छोटे दस्तकार राजनीतिक कार्यकर्त्ता जुड़ते रहेंगे। लेकिन मुख्य तौर पर यह क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों, स्त्रियों व पुरुषों की पार्टी होगी, जिनकी मुख्य जिम्मेदारी यह होगी कि वे योजना बनायें, फिर उसे लागू करें, प्रोपेगण्डा या प्रचार करें, अलग–अलग यूनियनों में काम शुरू कर उनमें एकजुटता लायें, उनके एकजुट हमले की योजना बनायें, सेना व पुलिस को क्रान्ति–समर्थक बनायें और उनकी सहायता या अपनी अन्य शक्तियों से विद्रोह या आक्रमण की शक्ल में क्रान्तिकारी टकराव की स्थिति बनायें, लोगों को विद्रोह के लिए प्रयत्नशील करें और समय पड़ने पर निर्भीकता से नेतृत्व दे सकें।

वास्तव में वही आन्दोलन का दिमाग हैं। इसीलिए उन्हें दृढ़ चरित्र की जरूरत होगी, यानी पहलकदमी और क्रान्तिकारी नेतृत्व की क्षमता। उसकी समझ राजनीतिक, आर्थिक और ऐतिहासिक समस्याओं, सामाजिक रूझानों, प्रगतिशील विज्ञान, युद्ध के नये वैज्ञानिक

तरीकों और उसकी कला आदि के अनुशासित भाव से किये गये गहरे अध्ययन पर आधारित होनी चाहिए। क्रान्ति का बौद्धिक पक्ष हमेशा दुर्बल रहा है, इसलिए क्रान्ति की अत्यावश्यक चीजों और किये कामों के प्रभाव पर ध्यान नहीं दिया जाता रहा। इसलिए एक क्रान्तिकारी को अध्ययन–मनन अपनी पवित्र जिम्मेदारी बना लेना चाहिए।

क्रांति व युवक :

भगत सिंह ने नीचे की अदालत में पूछा गया था कि क्रांति से उन लोगों का क्या मतलब है ? इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा था कि क्रांति के लिए खुनी लड़ाइयाँ अनिवार्य नहीं हैं। न ही उसमें व्यक्तिगत प्रतिहिंसा के लिए कोई स्थान है। वह बम और पिस्तौल का सम्प्रदाय नहीं है। क्रांति से हमारा अभिप्राय है। अन्याय पर आधारित मौजूदा समाज–व्यवस्था में आमूल परिवर्तन। क्रांति से हमारा मतलब अन्ततोगत्वा एक ऐसी समाज–व्यवस्था की स्थापना से है जिसमें सर्वहारा वर्ग का आधिपत्य सर्वमान्य होगा। जिसके फलस्वरूप स्थापित होने वाला विश्व–संघ मानवता को पूँजीवाद के बन्धनों से और साम्राज्यवादी युद्ध की तबाही से छुटकारा दिलाने में समर्थ हो सकेगा। क्रांति मानवजाति का जन्मजात अधिकार है जिसका अपहरण नहीं किया जा सकता। स्वतंत्रता प्रत्येक मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। क्रांति (इंकलाब) का अर्थ अनिवार्य रूप से सशस्त्र आंदोलन नहीं होता। बम और पिस्तौल कभी–कभी क्रांति को सफल बनाने के साधन मात्र हो सकते हैं। इसमें भी संदेह नहीं है कि कुछ आंदोलनों में बम एवं पिस्तौल एक महत्त्वपूर्ण साधन सिद्ध होते हैं, परंतु केवल इसी कारण से बम और पिस्तौल क्रांति के पर्यायवाची नहीं हो जाते। विद्रोह को क्रांति नहीं कहा जा सकता, यद्यपि हो सकता है कि विद्रोह का अंतिम परिणाम क्रांति हो। एक वाक्य में क्रांति का अर्थ 'प्रगति' के लिए परिवर्तन की भावना एवं आकांक्षा। जनता के लिए जनता का राजनीतिक शक्ति हासिल करना। साम्राज्यवादियों और उनके मददगारों को हटाकर जो कि उसी आर्थिक व्यवस्था के पैरोकार हैं, जिसकी जड़ें शोषण पर आधारित हैं। आगे आना है। हम गोरी बुराई की जगह काली बुराई को लाकर कष्ट नहीं उठाना चाहते।

पिस्तौल और बम इंकलाब नहीं लाते, बल्कि इंकलाब की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है और यही चीज थी।

क्रांति सफल बनाने में युवकों का योगदान :

भगत सिंह ने अपने लेखक युवक में लिखा है अगर रक्त की भेंट चाहिए तो सिवा युवक के कौन देगा ? अगर तुम बलिदान चाहते तो तुम्हें युवक की और देखना पड़ेगा। प्रत्येक जाति के भाग्यविधाता युवक ही तो होते हैं। आज के युवक ही कल के देश के भाग्य निर्माता हैं। वे ही भविष्य के सफलता के बीच हैं। नौजवान बहादुर होते हैं। उदार व भावुक होते हैं। क्योंकि नौजवान भीषण अमानवीय यातनाओं को मुस्कुराते हुए बर्दाश्त कर लेते हैं और बगैर किसी प्रकार की हिचकिचाहट के मौत का सामना करते हैं। क्योंकि मानव प्रेति का सम्पूर्ण इतिहास नौजवान आदमियों तथा औरतों के खून से लिखा है। क्योंकि सुधार हमेशा नौजवानों की शक्ति, साहस, आत्मबलिदान और भावात्मक विश्वास के बल पर ही प्राप्त हुए हैं। ऐसे नौजवान जो भय से परिचित नहीं हैं और जो सोचने के बजाय दिल से कहीं अधिक महसूस करते हैं।

''क्रांति जनता द्वारा, जनता के हित में'' इस कार्य को केवल क्रांतिकारी युवक ही पूरा कर सकेंगे। युवकों के सामने जो काम हैं, वह काफी कठिन है और उनके साधन बहुत थोड़े हैं। उनके मार्ग में बहुत–सी बाधाएं भी आ सकती हैं। लेकिन थोड़े किन्तु निष्ठावान व्यक्तियों की लगन उन पर विजय पा सकती है। युवकों को आगे जाना चाहिए। उनके सामने जो कठिन एवं बाधाओं से भरा हुआ मार्ग है और उन्हें जो मान कार्य सम्पन्न करना है, उसे समझना होगा। उन्हें अपने दिल में यह बात रख लेनी चाहिए कि ''सफलता मात्र एक संयोग है, जबकि बलिदान एक नियम है। नौजवानों को चाहिए कि वे स्वतंत्रतापूर्वक, गंभीरता से, शान्ति और सब्र के साथ सोंचे। उन्हें चाहिए कि वे भारतीय स्वतंत्रता के आदर्श को अपने जीवन के एकमात्र लक्ष्य के रूप में अपनाएं। उन्हें अपने पैरों पर खड़े होना चाहिए। उन्हें अपने आपको बाहरी प्रभावों से दूर रहकर संगठित करना चाहिए। उन्हें चाहिए कि मक्कार तथा बेईमान लोगों के हाथों में न खेलें। जिनके साथ उनकी कोई समानता नहीं है और जो हर नाजुक मौके पर आदर्श पर परित्याग कर देते हैं। उन्हें चाहिए कि संजीदगी और ईमानदारी के साथ ''सेवा, त्याग व बलिदान'' को अनुकरणीय वाक्य के रूप में अपना मार्गदर्शक बनाएं। याद रखिए कि ''राष्ट्रनिर्माण के लिए हजारों अज्ञात स्त्री–पुरुषों के बलिदान की आवश्यकता होती है जो अपने आराम व हितों के मुकाबले तथा अपने एवं अपने प्रियजनों के प्रोणों के मुकाबले देश की अधिक चिन्ता करते हैं। नौजवानों को क्रांति का यह संदेश देश के कोने–कोने में पहुँचाना है। फैक्ट्री कारखानों के क्षेत्रों में, गंदी बस्तियों और गाँवों की जर्जर झोपड़ियों में रहने वाले करोड़ों लोगों में इस क्रांति की अलग जगानी है। जिससे आजादी आएगी और तब एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य का शोषण असंभव हो जाएगा।

साम्प्रदायिक दंगे और इनका ईलाज :

भगत सिंह ने अपने लेख साम्प्रदायिक दंगे और इनका ईलाज में लिखा था। ''साम्प्रदायिक दंगों की जड़ खोंजे तो हमें इसका कारण आर्थिक ही जान पड़ता है। असहयोग के दिनों में नेताओं व पत्रकारों ने ढ़ेरों कुर्बानियाँ दी उनकी आर्थिक दशा बिगड़ गई थी। असहयोग आन्दोलन के धीमा पड़ने पर नेताओं पर अविश्वास–सा हो गया जिससे आजकल के बहुत से साम्प्रदायिक नेताओं के धंधे चौपट हो गए। विश्व में जो भी काम होता है, उसकी तह में पेट का सवाल जरूरी होता है। कार्ल मार्क्स के तीन बड़े सिद्धान्तों में से यह एक मुख्य सिद्धांत है। इसी सिद्धांत के कारण तबलीग, तनकीम, शुद्धि आदि संगठन शुरू हुए और इसी कारण से आज हमारी ऐसी दुर्दशा हुई।

उन्होंने आगे लिखा है ''सभी दंगों का ईलाज यदि हो सकता है तो वह भारत की आर्थिक दशा में सुधार से ही हो सकता है। दरअसल भारत में आम लोगों की आर्थिक दशा इतनी खराब है कि एक व्यक्ति दूसरे को चवन्नी देकर किसी और को अपमानित करवा सकता है। भूख और दुख से आतुर होकर मनुष्य सभी सिद्धांत ताक पर रख देता है। सच है, मरता क्या न करता'' लोगों को परस्पर लड़ने से रोकने के लिए वर्ग चेतना की जरूरत है। संसार के सभी गरीबों के चाहे वे किसी भी जाति, रंग, धर्म या राष्ट्र के हों अधिकार एक ही हैं। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम धर्म, रंग, नस्ल और राष्ट्रीयता व देश के भेदभाव मिटाकर एकजुट हो जाओ, इससे किसी दिन तुम्हारी जंजीरें कट जाएंगी और तुम्हें आर्थिक स्वतंत्रता मिलेगी। आगे उन्होंने लिखा है ''धर्म व्यक्ति का व्यक्तिगत मामला है। इसमें

दूसरे का कोई दखल नहीं। न ही इसे राजनीति में घुसाना चाहिए।'' यदि धर्म को अलग कर दिया जाए तो राजनीति पर हम सभी इकट्ठे हो सकते हैं। धर्मों में हम चाहे अलग–अलग ही रहें।

8 अप्रैल सन् 1929 को असेम्बली में बम क्यों फेंका

भगत सिंह ने अपने विचार असेम्बली हॉल में फेंका गया पर्चा और बम बम कांड पर सेशन कोर्ट में ब्यान में बताया है कि ''यह काम हमने किसी व्यक्तिगत स्वार्थ अथवा विद्वेष की भावना से नहीं किया है। हमारा उद्देश्य केवल उस शासन व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिवाद करना था जिसके हर एक काम से उसकी अयोग्यता ही नहीं वरन् अपकार करने की उसकी असीम क्षमता भी प्रकट होती है। इस विषय पर हमने जितना विचार किया उतना ही हमें इस बात का दृढ़ विश्वास होता गया कि वह केवल संसार के सामने भारत की लज्जाजनक तथा असहाय अवस्था का ढिंढोरा पीटने के लिए ही कायम है और वह एक गैर जिम्मेदार तथा निरंकुश शासन का प्रतीक है।

जनता के प्रतिनिधियों ने कितनी ही बार राष्ट्रीय माँगों को सरकार के सामने रखा, परन्तु उसने उन माँगों की सर्वथा अवहेलना करके हर बार उन्हें रद्दी की टोकरी में डाल दिया। सदन द्वारा पास किए गए गम्भीर प्रस्तावों को भारत की तथाकथित पार्लियामेंट के सामने ही तिरस्कारपूर्वक पैरों तले रौंदा गया है, दमनकारी तथा निरंकुश कानूनों को समाप्त करने की माँग करने वाले प्रस्तावों को हमेशा अवज्ञा की दृष्टि से ही देखा गया है और जनता द्वारा निर्वाचित सदस्यों ने सरकार के जिन कानूनों तथा प्रस्तावों को अवांछित एवं अवैधानिक बताकर रद्द कर दिया जाए उन्हें केवल कलम हिलाकर ही सरकार ने लागू कर लिया है।

क्रान्ति की परिभाषा :–

क्रान्ति के सम्बन्ध में भगतसिंह के विचार बहुत स्पष्ट थे। निचली अदालत में जब उनसे पूछा गया कि क्रान्ति शब्द से उनका क्या मतलब है, तो उत्तर में उन्होने कहा था ''क्रान्ति के लिए खूनी संघर्ष अनिवार्य नही है, और न ही उसमें व्यक्तिगत प्रतिहिंसा का कोई स्थान है। वह बम और पस्तौल की संस्कृति नहीं है। क्रान्ति से हमारा अभिप्राय यह हे कि वर्तमान व्यवस्था, जो खुलेतौर पर अन्याय पर टिकी हुई बदलनी चाहिए।'' अपनी बत को और भी स्पष्ट करते हुए उन्होने कहा था, ''क्रान्ति से हमारा अभिप्राय अन्ततः एक ऐसी सामाजिक व्यवसी की स्थापना से है जिसको इस प्रकार के घातक खतरों का सामना न करना पड़े और जिसमें सर्वहारा वर्ग की प्रभुसत्ता को मान्यता हो तथा एक विश्वसंघ मानवजाति को पूँजीवाद के बन्धन से और साम्राज्यवादी युद्धों से पत्पन्न होने वाली बरबादी और मुसीबतों से बचा सके।''

स्माजवाद की दिशा मे भगतसिंह की वैचारिक प्रगति की रफ्तार बहुत तेज थी। उन्होंने 1924 से 1928 के बीच विभिन्न विषयों का विस्तृत अध्ययन किया था। लाला लाजपत राय की द्वारकादास लाइब्रेरी के पुस्तकालयाध्यक्ष राजाराम शास्त्री के अनुसार उन दिनों भगतसिंह वस्तुतः ''किताबों को निगला करता था।'' उनके प्रिय विषय थे रूसी क्रान्ति सोवियत संघ, आयरलैण्ड, फ्रांस और भारत का क्रान्तिकारी आन्दोलन, अराजकतावाद और मार्क्सवाद। उन्होने और उनके साथियों ने 1928 के अन्त तक समाजवाद को अपने आन्दोलन का अन्तिम लक्ष्य घोषित कर दिया था और अपनी पार्टी का नाम भी तदनुसार बदल दिया था। उनकी यह वैचारिक प्रगति उनके फाँसी पर चढ़ने के दिन तक जारी रही। **निष्कर्ष :–**

भगत सिंह के जीवन पर उसके परिवार व डी0ए0वी0 कॉलेज के शिक्षक और गदर आंदोलन, अक्तूबर क्रांति, जलियांवाला बाग हत्याकांड, करतार सिंह की फांसी व गांधी जी के आंदोलन के असफलता का गहरा प्रभाव पड़ा उनके अनुसार युवक (नौजवान) क्रांति में महत्वपूर्ण योगदान देते है। व्यक्ति के जीवन गरिमा का वो सम्मान करते थे। क्रांति से उनका अर्थ प्रगति के लिए परिवर्तन था। वे धर्म और राजनीति को अलग–अलग रखना चाहते। वो ऐसी व्यवस्था का विरोध करते थे जिसमें व्यक्ति–2 को शोषण करे। वे आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था में परिवर्तन के पक्षकार थे।

संदर्भ :–

- क्रान्तिवीर भगत सिंह : 'अभ्युदय' और 'भविष्य', संपादक–चमनलाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2012
- भारत में सशस्त्र क्रांति–चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास मन्मथनाथ गुप्त, नागरी प्रेस, प्रयाग, संस्करण–1939
- सिंधु, विरेन्द्र, पृष्ठ नं0 23 से 28
- बम कांड पर सेशन कोर्ट में ब्यान (6जून 1929)
- सम्पादक, मार्डन रिव्यू के नाम पत्र (22 दिंसम्बर 1929)
- सिंह भगत ''साप्ताहिक मतवाला' खंड–2, नं0 38 तिथि मई 16, 1925
- सिंह, भगत ''नोजवान भरत सभा, लाहौर को घोषणापत्र (अप्रैल 1928)
- सिंह भगत ''विद्यार्थियों के नाम पत्र, ट्रिब्यून, लाहौर, तिथि 22 अक्तूबर, 1929
- साम्प्रदायिक दंगे और उनका इलाज (जून)
- वही
- बम कांड पर सेशन कोर्ट में ब्यान
- क्रान्तिवीर भगत सिंह : 'अभ्युदय' और भविष्य', संपादक – चमनलाल , लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद , संस्करण–2012, पृ0–100
- क्रान्तिवीर भगत सिंह : 'अभ्युदय' और भविष्य', संपादक – चमनलाल , लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद , संस्करण–2012, पृ0–232
- क्रान्तिवीर भगत सिंह : 'अभ्युदय' और भविष्य', संपादक – चमनलाल , लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद , संस्करण–2012, पृ0–279
- क्रान्तिवीर भगत सिंह : 'अभ्युदय' और भविष्य', संपादक – चमनलाल , लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद , संस्करण–2012, पृ0–237